International Journal of Education and Science Research Review
E- ISSN 2348-6457
Volume-1, Issue-6 December- 2014 P- ISSN2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की मूल्य आधारित शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर उनके अभिभावकों की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन

निमिषा इलायस
शोधार्थी
जे0जे0टी0यू0, झुंझनू (राजस्थान)

डॉ0 ऋतु भारद्वाज
शोध निर्देशिका
जे0जे0टी0यू0, झुंझनू (राजस्थान)

प्रस्तावना

मूल्य समाज के दर्पण होते हैं। इनके द्वारा ही समाज की वास्तविक सत्ता को स्वीकारा जाता है। मूल्य दूसरे रूप में मानव के मूल धन होते हैं। मूल्य केन्द्रित शिक्षा चन्द्रमा जैसी निर्मल होकर आनन्दस्वरूप एवं स्वयंमेव प्रकाशमय होती रहती है। इसी के प्रभावों द्वारा किसी भी देश में चतुर्दिक दिशाओं को एक ऐसा वातावरण प्रदान किया जाता है जिसमें मूल्य शिक्षा पर आधारित राष्ट्रीयता की नींव नवीनतम भूमिका को लेकर एक वृहत सामाजिक प्रणाली की ओर उन्मुख होने लगती है। इस उपागम में ही समस्त शैक्षिक प्रक्रियाओं की उपलब्धि समाहित है। नयी शिक्षा नीति (1985–86) के अनुसार–"सुसंगत एवं व्यवहार मूल्य परक शिक्षाप्रणाली को ऐसी प्रक्रियाओं के माध्यम से लागू किया जाये जो मानव जीवन के प्रति तर्क संगत वैज्ञानिक तथा नैतिक दृष्टिकोण पर आधारित हो"।

वस्तुतः मूल्य परक शिक्षा उन सभी क्रियाओं एवं प्रक्रियाओं की समष्टि है, जिन से व्यक्ति अपनी योग्यताओं, क्षमताओं, कुशलताओं एवं सृजनताओं से व्यवहारपरक मूलयों के व्यवहार रूपी प्रतिमानों की रचना करता है। इनका आधार जैवकीय, मनोवैज्ञानिक सामाजिक, वैज्ञानिक एवं पारिस्थितिकी होता है। जिनका प्रभाव शिक्षा एवं शिक्षक के विभिन्न स्तरों पर दृष्टिगोचर होता है। यह चक्रिय प्रक्रिया के रूप में निरन्तर अग्रसर होकर नवीन सन्दर्भ उपागम आयामों व दृष्टिकोणों को विकसित करती रहती है। घर अथवा परिवार बालक के गुणों व मूल्यों का मूल स्रोत माना गया है। घर शिष्टाचार तथा सदाचार सिखाने की प्रथम पाठशाला होती है। वस्तुतः मूल्यों की शिक्षा बच्चे के परिवार से आरम्भ होती है। वहाँ बच्चा अपने माता–पिता अथवा अन्य से मूल्यों की शिक्षा प्राप्त करता है। स्नेह व प्यार परिवार का विधान होता है। स्नेह दिया जाता है न कि माँगा जाता है। एक अच्छा घर सभी कार्यों, कर्तव्य, समान व्यवहार, सम्मान तथा समर्पण के भावों से ओत–प्रोत होता है। वहीं से बालक में सेवा, त्याग, दया, प्रेम, सत्य बोलना ईमानदारी, स्वच्छता, सुरक्षा, सौहार्द आदि सभी मूल्यों को विकसित किया जाता है। बालक अपने विकास की अवस्थाओं में अपने परिवार के सदस्यों से बराबर मूल्यों व गुणों को सीखता जाता है।

प्रशिक्षणार्थियों के अभिभावकों के सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों का प्रभाव

शिक्षा के मूल्यों में निरन्तर कमी आने का एक और कारण प्रशिक्षणार्थियों के माता–पिता के सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों का प्रभाव है।

धनी वर्ग के लोगों के पास धन की कोई कमी नहीं होती है। वे अपने बच्चों को हर तरह की सुविधायें चाहे वह बिना कॉलेज गये, या बिना पढ़ाई करें, अच्छे अंक वाली डिग्री ही क्यों न हो प्रदान करने की कोशिश करते हैं।

चूँकि प्रशिक्षणार्थी ऐसे वातावरण में पले–बढ़े होते हैं कि उन्हें बिना कुछ करे हर चीज प्राप्त हो जाती है और जब शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्हें ऐसी सुविधायें प्रदान की जाती हैं तो वे शिक्षा तथा ज्ञान को कोई महत्व नहीं देते। उनकी ऐसी अभिवृत्ति का प्रभाव उनके प्रशिक्षण काल में देखने को मिलता है।

निम्न वर्ग के लोगों के पास धन का अभाव होता है ऐसे वातावरण में प्रशिक्षाणर्थी पूरी तरह से प्रतियोगिता की सफलता पर निर्भर होते हैं क्योंकि उनके माता–पिता उन्हें सिर्फ सरकारी कॉलेजों में ही पढ़ा सकते हैं। सरकारी कॉलेजों में भी एस0सी/एस0टी0 का आरक्षण होता है। सामान्य छात्रों के लिए बहुत ही कम सीटे होती हैं। जो अच्छे मेरिट वाले छात्रों को ही मिलती हैं। ऐसी स्थिति में बहुत से

छात्र प्रवेश पाने से वंचित रह जाते हैं। अच्छा ज्ञान होते हुए भी तथा प्रतियोगिता में एस0सी0/एस0टी0 अभ्यर्थी से अच्छा नम्बर मिलने पर भी उन्हें प्रवेश नहीं मिलता है। ऐसी स्थिति में छात्रों में मन से शिक्षा के मूल्यों के प्रति महत्व कम हो जाता है तथा शिक्षा के मूल्यों के अभिवृत्ति के प्रति उनकी रूचि कम होती चली जाती है।

बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों पर प्रभाव

इस शोध की आवश्यकता इसलिए है कि वर्तमान में बी0एड अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के गिरते हुए स्तर के कारण आज शिक्षक उन्हें नैतिक चारित्रिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करने में असक्षम हे। आज छात्र अपने अन्दर इन गुणों का अभाव महसूस कर रहे हैं। छात्रों के चरित्र की हानि हो रही है, उनके चरित्र में निम्नता का समावेश हो रहा है। छात्र भग्नाशा तथा निराशा के शिकार होते जा रहे हैं। अतः वे अपने चरित्र का सर्वांगीण विकास करने में असक्षम है। आज छात्र स्वयं को उचित मार्ग दर्शन के अभाव में असहाय प्राणी महसूस कर रहे हैं। शिक्षा के उपरान्त उन्हें जीविका उपलब्ध नहीं है यदि है भी तो वह उच्च सामाजिक स्तर पर उन्हें वह पायदान उपलब्ध नहीं कराती जोकि उपलब्ध होना चाहिए। तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी की शिक्षा के उपरान्त भी युवा असहाय है।

किसी राष्ट्र का निर्माण इमारतों, चट्टानों स्मारकों एवं वृक्षों से नहीं होता है। बल्कि शिक्षक छा,ा निर्मित छात्र एवं छात्राओं के उत्तम सुगठित चरित्र से होता है जो भावी राष्ट्र के उत्तम नागरिक बनेंगें परन्तु वर्तमान परिवेश में प्रशिक्षणार्थी ही शिक्षण को कोई महत्व प्रदान नहीं कर रहे हैं। उन्हें केवल अध्यापन कार्य करने के लिए एक प्रमाण पत्र चाहिए जो उन्हें अच्छा से अच्छा वेतन दिला सकें। उनके अध्यापन कार्य पर पूरे राष्ट्र का भविष्य टिका है। इस बात से उन्हें कोई प्रभाव नहीं है। क्योंकि धन ही आजकल सर्वोपरि है।

उद्देश्य

1. सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड प्रशिक्षणार्थियों की मूल्य आधारित शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर उनके अभिभावकों की उच्च सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की मूल्य आधारित शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर उनके अभिभावकों की निम्न सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राक्कल्पना

1. सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड प्रशिक्षणार्थियों की मूल्य आधारित शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर उनके अभिभावकों की उच्च सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड प्रशिक्षणार्थियों की मूल्य आधारित शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर उनके अभिभावकों की निम्न सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

उपकरण ;ज्वववसेद्ध

इस शोध प्रक्रिया में स्वनिर्मित तथा प्रमापीकृत मूल्य आधारित मापनी जो क्तण ;डतेण्द्ध भ्तड़ीरंद स्ण्`पदही – क्तण्`ण च्ण् ीसनूंसपं द्वारा निर्मित है।

प्रयुक्त सांख्यिकी प्रविधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के विश्लेषण में प्रयुक्त सांख्यिकी का विवरण निम्न प्रकार से है–

मध्यमान

साधारणतः गणितीय औसत को ही मध्यमान कहते हैं। किसी अंक सामग्री को समस्त अंकों के योगफल को उन अंकों की संख्या से भाग देकर जो भागफल प्राप्त होता है, उसे मध्यमान कहते हैं। मध्यमान की सहायता से दो या दो से अधिक समूहों की तुलना की जाती है। मध्यमान ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्रों का प्रयोग किया जाता है।

$$M = \frac{\sum X}{N}$$

जहाँ

$M =$ मध्यमान

$\sum X$ = प्राप्तांकों का योग

N = पदों की संख्या

$$t = \frac{M_1 \square M_2}{\sigma D}$$

M_1 त्र पहले समूह का मध्यमान

M_2 त्र दूसरे समूह का मध्यमान

σD त्र दोनों मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि

σD (दोनों मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि) निम्न प्रकार ज्ञात की गई है–

$$\sigma D = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}$$

मानक विचलन

मानक विचलन दिये गये प्राप्तांकों का मध्यमान से विचलनों के वर्गों का वर्गमूल है। इसका प्रयोग समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की जाँच करने के लिए किया गया है। मानक विचलन ज्ञात करने के लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया है।[1]

$$S.D = \sqrt{\frac{\sum x^2}{N} - \left(\frac{\sum x}{N}\right)^2}$$

जहाँ

$S.D$ = मानक विचलन

$\sum x$ = प्राप्तांकों का योग

$\sum x^2$ = प्राप्तांकों के वर्गों का योग

N = पदों की संख्या।

टी मान

टी मान का प्रयोग समूहों के उत्तर की सार्थकता की जाँच के लिए किया गया है। इसके लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया है–

$$t = \frac{M_1 = -M_2}{\sqrt{\left(\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}\right)}}$$

जहाँ पर

$M_1 =$ प्रथम समूह का मध्यमान

$M_2 =$ द्वितीय समूह का मध्यमान

$N_1 =$ प्रथम समूह की संख्या

$N_2 =$ द्वितीय समूह की संख्या

$\sigma_1 =$ प्रथम समूह का प्रामाणिक विचलन

$\sigma_2 =$ द्वितीय समूह का प्रामाणिक विचलन

प्राक्कल्पना ;भ्लचवजीमेपेद्ध के अनुसार आंकड़ों का विश्लेषण

1. प्राक्कल्पनागत निष्कर्ष

सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की मूल्य आधारित शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर उनके अभिभावकों की उच्च सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति के प्रभाव से सम्बन्धित प्राप्तांकों के मध्यमानों में .05 तथा .01 विश्वास स्तरों पर सार्थक अन्तर पाया गया क्योंकि 95 प्रतिशत विश्वसनीयता स्तर पर ही अनुपात की तालिका मूल्य (1.97) जो कि टी अनुपात के परिकलित मूल्य (–259.6) से कम है। इसी तरह 99 प्रतिशत विश्वसनीयता स्तर पर भी तालिका मूल्य (2.59) परिकलित मूल्य (–259. 6) से कम है। अतः द्वितीय शून्य परिकल्पना निरस्त हो जाती है और निष्कर्ष निकलता है कि–

सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालय में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थी की मूल्य आधारित शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर उनके अभिभावकों की उच्च सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति का प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य–1

सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की मूल्य आधारित शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर उनके अभिभावकों की उच्च सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।

जो प्रशिक्षणार्थी सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों में बी0एड0 में अध्ययन करते हैं उनमें से कुछ प्रशिक्षणार्थियों के अभिभावकों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति उच्च होती है। उच्च स्थिति वाले प्रशिक्षणार्थियों में ऐसा देखा गया है कि अधिकांशतः ऐसे प्रशिक्षणार्थी शिक्षण मूल्यों को ध्यान नहीं देते उन्हें यह एहसास रहता है कि अगर मेरिट में नहीं लिये गये तो अच्छा शुल्क देकर गैर सरकारी में प्रवेश ले लेगें।

उच्च वर्ग ज्यादा से ज्यादा गैर सरकारी कॉलेज को ही महत्व देते हैं। उनके साथ–साथ उनके अभिभावक भी यही चाहते हैं कि किसी भी तरीके से उनका बच्चा बी0एड0 की डिग्री ले ले।

अतः शोध के इस उद्देश्य के अन्तर्गत ऐसे प्रशिक्षणार्थियों की मूल्य आधारित शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति उसके मूल्यों द्वारा प्रभावित होती है। मात्र डिग्री लेना शिक्षण के प्रति एक तरह से खिलवाड़ करना है। ऐसे शिक्षण से तैयार भविष्य अंधकारमय ही होगा।

2. प्राक्कल्पनागत निष्कर्ष

सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की मूल्य आधारित शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर उनके अभिभावकों की निम्न सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति के प्रभाव से सम्बन्धित प्राप्तांकों के मध्यमानों में .05 तथा .01 विश्वास स्तरों पर सार्थक अन्तर पाया गया क्योंकि 95 प्रतिशत विश्वसनीयता स्तर पर ही अनुपात का तालिका मूल्य 1.97 है जोकि टी–अनुपात के परिकलित मूल्य 25.63 से कम है। इसी तरह 99 प्रतिशत विश्वसनीयता स्तर पर भी तालिका मूल्य (2.59) परिकलित मूल्य 25.63 से कम है। अतः तृतीय शून्य परिकल्पना निरस्त हो जाती है और निष्कर्ष निकलता है कि–

सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की मूल्य आधारित शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर उनके अभिभावकों की निम्न सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अन्तर पड़ता है।

उद्देश्य–2

सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की मूल्य आधारित शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर उनके अभिभावकों की **निम्न** सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।

बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों का निम्न वर्ग का होना भी उनके मूल्यों पर प्रभाव डालता है क्योंकि इस वर्ग के प्रशिक्षणार्थी के माता–पिता की आय अच्छी न होने की वजह से ये सरकारी कालिज में प्रवेश के लिए निर्भर होते हैं। अगर किसी तरह से वे गैर सरकारी कॉलेज में प्रवेश ले लेते हैं तो उन्हें आगे बहुत ही परेशानी का सामना करना पड़ता है।

अतः शोध के इस उद्देश्य के अन्तर्गत ऐसे प्रशिक्षणार्थियों की मूल्य आधारित शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति उसके मूल्यों द्वारा प्रभावित होती है। मात्र डिग्री लेना शिक्षण के प्रति एक तरह से खिलवाड़ करना है। ऐसे शिक्षण से तैयार भविष्य अंधकारमय ही होगा।

अतः प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि बढ़ते हुए आधुनिक समाज में जहाँ पब्लिक स्कूलों में विशेष सुविधा एड्कैम, जैसे विभिन्न संसाधनों द्वारा शिक्षा दी जा रही है वहाँ निम्न सामाजिक व आर्थिक स्थिति वाले बालक पिछड़ जाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 सिंह गया (2013) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक आर0 लाल बुक डिपो मेरठ।
2. सक्सेना एन0 आर0 स्वरूप एवं डॉ0 चतुर्वेदी शिखा (2008) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक आर0 लाल बुक डिपो मेरठ
3. वर्मा जी0 एस0 (2012) मूल्य शिक्षण इण्टन नेशनल पब्लिशिंग हाऊस मेरठ।
4. डॉ0 भट्टाचार्य जी0 सी0 (2005) अध्यापक शिक्षा विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
5. सिंह, रामपाल ओ0 पी0, शैक्षिक अनुसन्धान एवं सांख्यिकी, पृ0 110–112
6. सिंह, राम पाल ओ0 पी0, शैक्षिक अनुसन्धान एवं सांख्यिकी पृष्ठ संख्या 110–112